(1)

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub: MONEY AND BANKING
Paper: Subsidiary Paper
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

Lecture: 106

B. Com Part: IInd

* Introduction

** COMPARISON OF INFLATION AND DEFLATION *
(मुद्रा स्फीति एवं विस्फीति की तुलना)

स्फीति एवं विस्फीति दोनों ही समाज के लिये हानिकारक रोग के समान है, परंतु विस्फीति, स्फीति की तुलना में अधिक भयानक रोग है। प्रो. कीन्स ने कहा है कि, "स्फीति अन्यायपूर्ण है और विस्फीति अनुपयुक्त है परंतु विस्फीति दोनों में अधिक बुरी है।

* मुद्रा-स्फीति का अन्यायपूर्ण होना (Inflation is Unjust)
यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो पता चलेगा कि मुद्रा-स्फीति अन्यायपूर्ण होती है क्योंकि :

i) इससे सामान्य जनता की क्रय-शक्ति बहुत कम हो जाती है और उसे आवश्यकता की वस्तुएँ महँगे मूल्यों पर मिलती है। इतना ही नहीं, अनेक वस्तुओं में अधिक लाभ के लालच में मिलावट तक की जाने लगती है।

ii) मुद्रा-स्फीति से निश्चित आय वाले वर्ग को बहुत अधिक हानि होती है। उनकी आय तो पूर्वानुसार ही रहती है, किन्तु वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से उनका नियमित व्यय चलाना बहुत कठिन हो जाता है। इस प्रकार विधवाओं, पेंशन प्राप्त करने वालो तथा वेतन भोगी वर्गों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

iii) मुद्रा-स्फीतिकाल में ऋणदाता वर्ग को भी हानि होती है, इन्होंने जिस समय धनराशि उधार दी थी, उस समय मुद्रा की जो क्रय-शक्ति थी, वह अब नहीं रहती, अत: उन्हें धनराशि मिलती है, उसका आर्थिक महत्व कम हो जाता है।

iv) मुद्रा-स्फीति के युग में प्राय: अनेक प्रकार के अनैतिक अपराध होने लगते है। चोर-बाजारी, मुनाफाखोरी, करों की चोरी,

Date :
Page:

तथा माल संग्रह करने की प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती है। इन सब से सामान्य नागरिक को अधिक कष्ट होता है।

मुद्रा-विस्फीति अनुपयुक्त (Deflation is Inexpedient)
मुद्रा-स्फीति अनेक दृष्टिकोण से अन्यायपूर्ण होती है, किन्तु मुद्रा-[redacted] विस्फीति और अनुपयुक्त है, इसके निम्नलिखित कारण प्रस्तुत किए जा सकते हैं :-

i) उत्पादन में शिथिलता - मुद्रा विस्फीति के काल में वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट आने लगती है जिससे उत्पादकों के लाभ कम हो जाते है। कुछ उत्पादकों को तो उत्पादन बंद करने तक के लिए विवश होना पड़ता है। इस प्रकार उत्पादन कम होने से देश की अर्थव्यवस्था को भारी हानि पहुँचती है।

ii) बेरोजगारी - मुद्रा-स्फीति का सबसे हानिकारक प्रभाव यह होता है कि उत्पादन गिरने से कारखाने बंद होने लगते है और अनेकानेक श्रमिक बेरोजगार हो जाते है। इससे समाज में व्यापक असन्तोष की स्थिति बन जाती है।

iii) भविष्य के प्रति निराशा - मुद्रा-स्फीति की तुलना में मुद्रा संकुचन काल में अधिक निराशा होती है। व्यापारी और उद्यमी इसलिए निराश हो जाते है क्योंकि कोई माल खरीदने वाला नही होता। कृषक और श्रमिक वर्ग भी निराश हो जाते है क्योंकि कृषि उत्पादन की कीमतें घटने लगती है और श्रमिक वर्ग बेरोजगारी के कारण अपनी न्यूनतम आवश्यकताएँ भी पूरी नही कर पाते।

iv) अति-उत्पादन और गरीबी का विरोधाभास - मुद्रा-संकुचन काल में अर्थव्यवस्था में एक विचित्र विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर तो गोदाम में बिना बिका माल पड़ा रहता है तथा दूसरी ओर लोगों के पास वस्तुओं को खरीदने के लिए पैसा नही होता। वस्तुएँ तो सस्ती होती है, पर लोगों के पास क्रय-शक्ति का अभाव होता है जिससे वे अपनी आवश्यताएँ भी पूरी नही कर पाते।

* संकुचन से समृद्धि की ओर जाना अधिक कठिन – संकुचन काल को इसलिए भी अनुपयुक्त कहा जाता है क्योंकि इसकी में गिरती हुई अर्थव्यवस्था को संभालना बहुत अधिक कठिन होता है तथा अनेक नियंत्रण भी पतन की स्थिति को रोक नहीं पाते। एक कारण यह भी है कि अवसाद की अवस्था समृद्धि से अधिक लंबी होती है।

* दोनों में मुद्रा-संकुचन अधिक कष्टदायक (Of the two Deflation is the worse)

मुद्रा-स्फीति और मुद्रा-विस्फीति में एक बहुत बड़ा अंतर है कि मुद्रा-स्फीति – यदि साधारण गति से हो रही है तो आर्थिक विकास के लिये सामान्यतः लाभकारी होती है, इसमें उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है तथा अधिक व्यक्ति रोजगार पाने लगते हैं। मुद्रा-स्फीति की दर बढ़ जाने से कुछ वर्गों को अवश्य अत्यधिक कष्ट होता है।

किन्तु मुद्रा-विस्फीति काल में तो वस्तुओं के मूल्य गिरने लगते हैं, उत्पादन कम होने लगता है, व्यापार तथा उद्योग चौपट हो जाते हैं, बेरोजगारी फैल जाती है और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था निर्जीव हो जाती है।

प्रो० केन्स ने कहा है कि "मुद्रा-स्फीति अन्यायपूर्ण है, मुद्रा-संकुचन अनुपयुक्त – इन दोनों में मुद्रा-संकुचन अधिक बुरा है" इस कथन की सत्यता उपर्युक्त विवरण से सिद्ध हो जाती है।

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College,
Saharsa